सम्पादिका

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास–रजत–नग पगतल में।

पीयूष–स्रोत–सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।

21वीं सदी में समाज के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री ने अपनी बुद्धि और क्षमता का परिचय दिया है। समाज को भी स्वीकार करना पड़ा कि स्त्री की क्षमताओं का उपयोग किये बगैर समाज का समग्र विकास संमभ नहीं है। स्त्री भी अपनी पारंपरिक छवि से बहार निकल कर समाज निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही हैं। सर्वप्रथम वह बुद्ध ही थे जिन्होंने स्त्री को उसकी क्षमताओं से अवगत किया। स्त्रियों के लिए पुथक भिक्षुणी संघ की स्थापना करके उन्हें शिक्षित होने और निर्वाण प्राप्त करने का स्वतंत्र अवसार प्रदान किया। बुद्ध ने पंरपरा से चली आ रही जातीय व्यवस्था, स्त्री–पुरूष असमानता और रूढ़िवादी समाज को मानवता का संदेश दिया। बुद्ध के समय में पहली बार स्त्री को भी पुरूष के समान अपनी क्षमताओं से परिचित होने का अवसर मिला। जिस ज्ञान और सत्ता पर पुरूष का एक छत्र राज था, बुद्ध के समय में इस निषेध क्षेत्र में स्त्रीयों का प्रवेश एक ऐतिहासिक घटना थी।

संघ प्रवेश–अर्हता के निर्धारित मानकों में अच्छा स्वास्थ्य, ऋणों से मुक्त होना, दासत्व से मूक्त और राजकीय सेवा में न होना प्रमुख थे। संघ द्वारा निर्धारित किये गये कठोर नियमों के बावजूद अत्याधिक संख्या में स्त्रियों ने गृहस्थ जीवन को त्याग संघ में प्रवेश कर भिक्षुणी बनना स्वीकार किया। निशिचित रूप से जीवन यापन के विभिनन उपलब्ध विकल्पों में उन्हें संघ का जीवन उत्तम लगा। थेरीगाथा प्रारम्भिक बौद्ध धर्म, तत्कालीन समाज और स्त्रियों के पारम्परिक समीकरण को समझने का प्रमुख स्रोत है। अन्य स्रोतो की तुलना में यह इसलिए विशिष्ट है कि इसकी रचना उन्हीं स्त्रियों के द्वारा की गयी जिनका सामाजिक घटक के रूप

में विश्लेषण किया जाना है। अन्यथा इतिहास में स्त्री को खोजते हुए हमें आम तौर पर पुरूषों द्वारा रचित साहित्य का ही सहारा लेना पड़ता है। वस्तुतः थेरीगाथा स्त्रियों के अनुभव संसार का अनूठा संकलन है जो उनके सुख–दुःख, इच्छा–अनिच्छा, महत्वाकांक्षाओं–संवेदनाओं का परिचय हमें देता है। थेरीगाथा नारीवाद से अनभिज्ञ ऐतिहासिक चरण का स्त्री–विमर्श प्रस्तुत करने वाला महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इन गाथाओं में स्त्रियों के सामाजिक–धार्मिक–आध्यात्मिक अनुभव उल्लिखित हैं जो मानव के विचार श्रृंखला के इतिहास को और अधिक समृद्ध बनाते हैं।

थेरीगाथाओं में समाहित मार्मिक उद्‌गारों से जो शांत–गंभीर एवं निर्मय–ध्वनि अंतः में अनुगूंजित होकर तादात्मय स्थिति का निर्माण करती है, भारतीय साहित्य के अन्य गीत–काव्यों में दुर्लभ है। इन गाथाओं का प्रमुख–वैशिष्ट्य है भिक्षुणियों की आंतरिक ध्वनि, जिसने अनुभवातिशयता से जनित भावातिरेकमयी स्थिति मे मधुर–स्वर–युक्त होकर प्रस्फुटित हो गई है। प्रायः प्रत्येक भिक्षुणियों की गाथा का प्रांरभिक अंश जीवन–परिचय प्रस्तुत करता है। ये पालि–साहित्य के करूण–रस के सर्वोत्तम गीत हैं। भिक्षुणियों ने अपनी जीवन–कथा कहने में रंचमात्र भी कल्पना अथवा आडंबर का पक्ष नहीं ग्रहण किया।

Dr. Sangh Mitra Baudh